10वाँ विश्व आयुर्वेद कॉन्ग्रेस और आरोग्य एक्सपो

चर्चा में क्यों?

हाल ही में **देहरादून में 10वें विश्व आयुर्वेद कॉन्ग्रेस (WAC 2024)** और आरोग्य एक्सपो का उद्घाटन किया गया। यह एक महत्त्वपूर्ण मोड़ है जहाँ विभिन्न **विचारधाराओं, संस्कृतियों और नवाचारों की धाराएँ मिलती हैं।**

मुख्य बिंदु

- **"देश का प्रकृति संरक्षण अभियान" का शुभारंभ:**
    - **9वें आयुर्वेद दिवस (29 अक्तूबर, 2024)** के अवसर पर केंद्रीय आयुष मंत्री ने राष्ट्रव्यापी अभियान **"देश का प्रकृति परीक्षण अभियान" का शुभारंभ किया।**
    - इसका उद्देश्य आयुर्वेद सिद्धांतों का उपयोग करके 1 करोड़ से अधिक व्यक्तियों की प्रकृति का आकलन करना है।
    - नागरिकों को इस महान पहल में सक्रिय रूप से भाग लेने और योगदान देने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है।
- **आयुष ग्रिड और वैश्विक निवेश:**
    - **आयुष ग्रिड आयुष क्षेत्र को** डिजिटल बनाने और पारंपरिक स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों को बढ़ावा देने के लिये **आयुष मंत्रालय की** एक **परियोजना है।**
    - इसके लाभों में **नवाचारों के साथ स्वास्थ्य सेवा में क्रांति लाना, प्रभावशीलता, सुरक्षा और सामर्थ्य में वृद्धि करना शामिल है।**
    - आयुर्वेद से संबंधित पहलों को समर्थन देने के लिये वैश्विक साझेदारों की ओर से 1.3 बिलियन डॉलर से अधिक का निवेश प्रस्तावित है।
- **WAC 2024:**
    - **विश्व आयुर्वेद फाउंडेशन (WAF)** द्वारा आयोजित, जो विज्ञान भारती की एक पहल है।
    - इस कार्यक्रम के लिये 5500 से अधिक भारतीय प्रतिनिधियों और 54 देशों के 350 से अधिक प्रतिनिधियों ने पंजीकरण कराया।
    - इस कार्यक्रम में **150 से अधिक वैज्ञानिक सत्र और 13 सहयोगी कार्यक्रम शामिल हैं,** जिनमें पूर्ण चर्चाएँ भी शामिल हैं।
    - इसका **विषय है "Digital Health: An Ayurveda Perspectiveअर्थात् डिजिटल स्वास्थ्य: आयुर्वेद परिप्रेक्ष्य"** जो **आयुर्वेद को आगे बढ़ाने के लिये आधुनिक प्रौद्योगिकियों का लाभ उठाने पर केंद्रित है।**
    - विचार-विमर्श:
        - **डिजिटल उपकरणों के माध्यम से स्वास्थ्य सेवा वितरण को** बढ़ाना।
        - **अनुसंधान पद्धतियों को** पुनः परिभाषित करना।
        - **आयुर्वेद को वैश्विक स्वास्थ्य** परिदृश्य में एकीकृत करना।
- **आयुष मंत्रालय की भूमिका:**
    - **आयुष मंत्रालय** विश्व आयुर्वेद कॉन्ग्रेस के **आयोजन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता** है, जो **विश्व स्तर पर आयुर्वेद को बढ़ावा देने के लिये भारत की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है।**
- **योगदान:**
    - अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के माध्यम से आयुर्वेद ज्ञान, अनुसंधान और प्रथाओं को आगे बढ़ाना।
    - आयुर्वेद की वैश्विक प्रासंगिकता और भविष्य के विकास पर चर्चा करने के लिये विशेषज्ञों, चिकित्सकों और नीति निर्माताओं को शामिल करना।
- **WAC 2024 का महत्त्व:**
    - **आयुर्वेद की समृद्ध विरासत का** जश्न मनाता है और वैश्विक स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली में इसके भविष्य की कल्पना करता है।
    - **पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक प्रौद्योगिकी के साथ जोड़ना,** यह सुनिश्चित करना कि आयुर्वेद एक स्थायी और समग्र स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली के रूप में विकसित हो।
    - WAC 2024 आयुर्वेद को वैश्विक स्वास्थ्य सेवा में **परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में स्थापित करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण आयोजन है।**

विश्व आयुर्वेद फाउंडेशन (WAF)

- यह एक ऐसा संगठन है जो **विश्व स्तर पर आयुर्वेद को बढ़ावा देता है और आयुर्वेद से संबंधित अनुसंधान, स्वास्थ्य कार्यक्रमों** और अन्य गतिविधियों का समर्थन करता है।

- यह **विज्ञान भारती** की एक पहल है जिसकी **स्थापना वर्ष 2011 में हुई थी।** WAF के उद्देश्यों में शामिल हैं:
    - अनुसंधान का समर्थन
    - शिविरों, क्लीनिकों और सेनेटोरियम के माध्यम से स्वास्थ्य कार्यक्रमों का समर्थन करना
    - सेमिनार, प्रदर्शनियाँ और अध्ययन समूहों का आयोजन
    - आयुर्वेद के लिये नीति और योजना में नेतृत्व प्रदान करना
- WAF **विश्व आयुर्वेद कॉन्ग्रेस (WAC) का आयोजन करता है,** जो एक ऐसा आयोजन है जिसमें **वैज्ञानिक सत्र, स्वास्थ्य मंत्रियों के सम्मेलन और अन्य गतिविधियाँ शामिल होती हैं।**
- WAC का उद्देश्य इस बात पर चर्चा करना है कि आयुर्वेद विभिन्न स्वास्थ्य चुनौतियों का समाधान कैसे कर सकता है।

दृष्टि The Vision

आयुष चिकित्सा पद्धति

आयुष में आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध, सोवा रिग्पा और होम्योपैथी शामिल हैं, आयुर्वेद का 5000+ वर्षों का प्रलेखित इतिहास है।

आयुर्वेद

- **संहिता काल (1000 ईसा पूर्व):** परिपक्व चिकित्सा प्रणाली के रूप में उभरा
  - **चरक संहिता:** सबसे प्राचीन और आधिकारिक संहिता
  - **सुश्रुत संहिता:** आठ विशिष्टताओं में मौलिक सिद्धांत और चिकित्सीय विधियाँ प्रदान करती है

भगवान ब्रह्मा को आयुर्वेद का प्रथम प्रवर्तक माना जाता है

- **मुख्य शाखा:**
  - **आत्रेय पुनर्वसु**- चिकित्सकों की शाखा
  - **दिवोदास धन्वंतरि** - शल्यचिकित्सकों की शाखा

आयुर्वेद की शाखाएँ

- काय चिकित्सा- चिकित्सा।
- शल्य चिकित्सा- सर्जरी।
- शालाक्य तंत्र- ईएनटी और नेत्र विज्ञान।
- बाल रोग चिकित्सा।

- अगद तंत्र- विष विज्ञान।
- भूतविद्या - मनोरोग।
- रसायन- कायाकल्प चिकित्सा और जराचिकित्सा।
- वाजीकरण तंत्र- सेक्सोलॉजी।

योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा

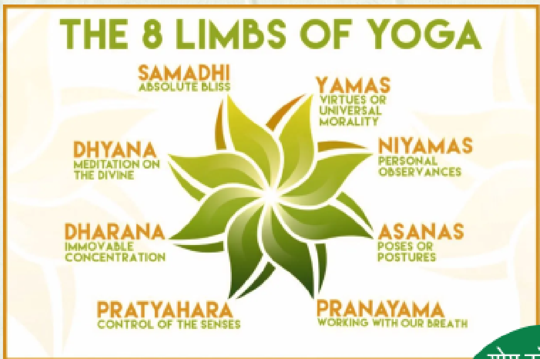

योग को सर्वप्रथम महर्षि पतंजलि ने व्यवस्थित रूप में योगसूत्र के रूप में प्रतिपादित किया

- **प्राकृतिक चिकित्सा:** 5 प्राकृतिक तत्वों - पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश की सहायता से उपचार
  - शरीर की स्व-उपचार क्षमता सिद्धांतों और स्वस्थ जीवन के सिद्धांतों पर आधारित
  - रोग-केंद्रित दृष्टिकोण के स्थान पर व्यक्ति-केंद्रित दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है

यूनानी

ग्रीस में अग्रणी, अरबों द्वारा 7 सिद्धांतों के रूप में विकसित (उमूर-ए-तब्बिया)

- बुकरात (हिप्पोक्रेट्स) और जालीनूस (गैलेन) की शिक्षाओं के ढाँचे के आधार पर
  - चार ह्यूमर्स का हिप्पोक्रेटिक सिद्धांत अर्थात् रक्त, कफ, पीला पित्त और काला पित्त
- WHO द्वारा मान्यता प्राप्त और भारत द्वारा वैकल्पिक स्वास्थ्य प्रणाली के रूप में आधिकारिक दर्जा प्रदान किया गया

सिद्ध

10000 - 4000 ईसा पूर्व; सिद्धर अगस्तियार- सिद्ध चिकित्सा के जनक

- निवारक, प्रोत्साहनात्मक, उपचारात्मक, पुनर्जीवनात्मक और पुनर्वासात्मक स्वास्थ्य देखभाल
- **4 घटक:** लैट्रो-रसायन विज्ञान, चिकित्सा अभ्यास, योग अभ्यास और बुद्धि
- 3 निदानात्मक ह्यूमर्स (मुक्कुट्रम) और 8 महत्त्वपूर्ण परीक्षणों (एन्वागई थेरवु) पर आधारित है

आयुर्वेद के 3 गुण (त्रिदोष): वात, पित्त और कफ

सोवा रिग्पा

उत्पत्ति: भगवान बुद्ध के समय 2500 वर्ष पूर्व भारत में

- लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश आदि के हिमालयी क्षेत्रों में पारंपरिक चिकित्सा।
- भारतीय चिकित्सा केंद्रीय परिषद् अधिनियम, 1970 (वर्ष 2010 में संशोधित) द्वारा भारत में मान्यता प्राप्त।

होम्योपैथी

जर्मन चिकित्सक डॉ. क्रिश्चियन फ्रेडरिक सैमुअल हैनिमैन ने इसके मूलभूत सिद्धांतों को संहिताबद्ध किया

- जर्मन चिकित्सक डॉ. क्रिश्चियन फ्रेडरिक सैमुअल हैनिमैन ने इसके मूलभूत सिद्धांतों को संहिताबद्ध किया।
- औषधियाँ मुख्यतः प्राकृतिक पदार्थों (पौधे उत्पाद, खनिज, पशु स्रोत) से तैयार की जाती हैं।
- वर्ष 1810 में यूरोपीय मिशनरियों द्वारा भारत में लाया गया; वर्ष 1948 में आधिकारिक मान्यता प्रदान की गई।
- **3 प्रमुख सिद्धांत:**
  - सिमिलिया सिमिलिबस क्यूरेंटूर ("सम: समम् शमयति" या "समरूपता")
  - सिंगल मेडिसिन
  - मिनिमम डोज़

Drishti IAS

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/10th-world-ayurveda-congress-and-arogya-expo